प्यारे नबी

अब्दुस्सत्तार दलवी

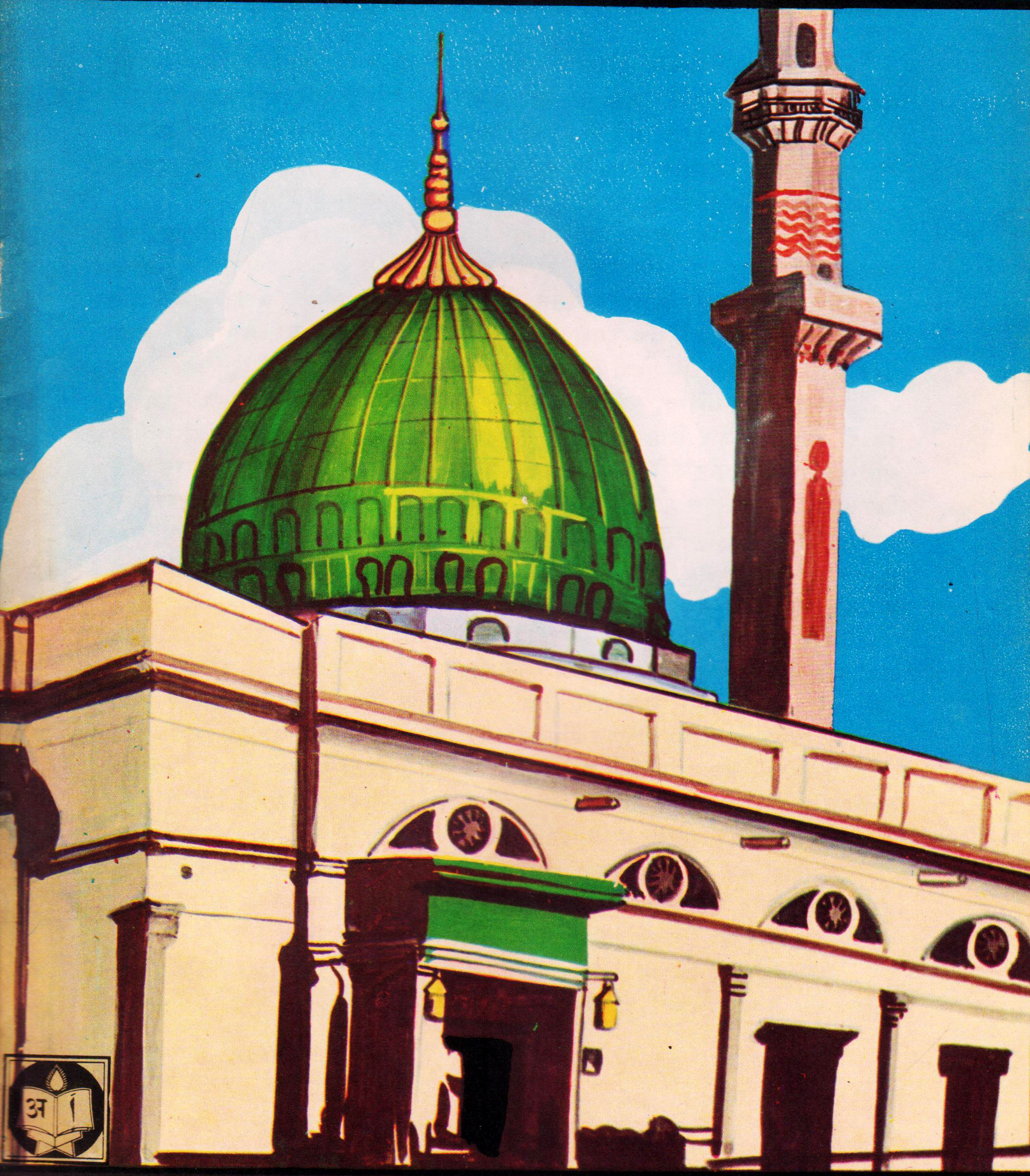

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा बम्बई

बच्चों की कहानियां

हमारी बात

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगडों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और ख़तरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

प्यारे नबी

अब्दुस्सत्तार दलवी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८२

संपादक :
मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :
दिनेश शाह

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

मुद्रक :
अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डाक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

मूल्य :
दो रुपये

प्यारे नबी

हिंदुस्तान के पश्चिम में मध्य-पूर्व एशिया के नाम से देशों के जिस समूह को जाना जाता है, वह पैगंबरों और नबियों की धरती रही है। यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों के कई पैगंबरों और नबियों जैसे दाऊद, सुलैमान, याकूब, यूसुफ, इब्राहीम, इस्माईल, मूसा, ईसा वगैरह की जन्मभूमि यही भू-खंड है।

इसी भू-खंड के अरबिस्तान में हजरत मुहम्मद का जन्म हुआ था।

यह इलाका करीब-करीब रेगिस्तानी है। दूर-दूर तक रेत के अलावा कुछ दिखायी नहीं देता।

आज से चौदह सौ वर्ष पहले की बात है। तब यह देश अत्याचार और भ्रष्टाचार के अंधेरे में डूबा हुआ था। लड़कियों के जन्म लेने पर उन्हें जीवित दफन कर दिया जाता था। लोग आपस में हमेशा तलवारें निकाले रहते थे। शायद ही कोई ऐसी बुराई थी, जो वहां मौजूद न हो।

हजरत ईसा के जन्म के लगभग छ: सौ वर्ष बाद हजरत मुहम्मद अरब के मशहूर नगर मक्का में पैदा हुए। हजरत मुहम्मद के पैदा होने से दो महीने पहले ही उनके पिता का स्वर्गवास हो चुका था। उनकी मां आमिना भी उनके बचपन में ही दुनिया से विदा ले चुकी थीं। उनके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने उनको पाला।

हजरत मुहम्मद में शुरू से ही कुछ ऐसी खासियतें थीं कि वे अपने-पराये सबके प्यारे बन गये थे। वे इतने ईमानदार थे कि रिवाज के मुताबिक जब लोग कहीं बाहर जाते तो अपनी चीजें उनके पास रख जाते। वापस आने पर उन्हें उनकी चीजें वैसी ही मिलतीं।

उनकी इस अच्छी आदत की वजह से लोग उन्हें "अमीन" यानी "विश्वसनीय" के नाम से भी याद करते थे।

हजरत मुहम्मद से पहले अरबवासी अलग-अलग कबीलों में फैले हुए थे। हर कबीले का एक सरदार होता था और कबीले की पूज्य मूर्ति भी अलग होती थी। कबीलेवाले बात-बात पर लड़ते-झगड़ते रहते थे।

हजरत मुहम्मद का संबंध कुरैश कबीले से था। वे इन बातों से कुढ़ते थे। उन्होंने अरबों को बुतों और कबीलों के नाम पर लड़ने से छुटकारा दिलाया। उनकी शिक्षा थी कि खुदा एक है जो सारे संसार का पालनहार है। उसी ने चांद-सूरज, दिन-रात, पेड़-पौधे, इंसान-जानवर वगैरह बनाये हैं। हमें एक उसी की पूजा करनी चाहिए।

हजरत मुहम्मद की ईमानदारी और अच्छी आदतों की चर्चा सुनकर अरब की एक बड़ी धनवान औरत खदीजा ने अपने बहुत सारे सामान के साथ उन्हें व्यापार के लिए शाम देश भेजा। वे उनकी ईमानदारी और सच्चाई से इतनी प्रसन्न हुई कि उन्होंने हजरत मुहम्मद से विवाह कर लिया। उस समय हजरत मुहम्मद की उमर पच्चीस वर्ष की थी।

आमलोगों की तरह हजरत मुहम्मद भी सांसारिक जीवन गुजारने लगे। उन्हें भी दुनिया के दूसरे काम थे, उनका भी सामाजिक जीवन था, संतान भी थी, व्यापार भी था। रात-दिन इसी में गुजरने लगे। फिर भी उन्हें एक चीज की तलाश थी और वह था खुदा। वे हमेशा इसी ध्यान में डूबे रहते।

मक्का नगर से तीन मील की दूरी पर एक गुफा थी, जिसका नाम हिरा था। हजरत मुहम्मद गुफा में रहकर महीनों गुजार देते।

उनसे एक बार किसी ने पूछा कि आप कैसी इबादत करते हैं तो उन्होंने उत्तर दिया कि सोच-विचार करना और शिक्षा लेना। वे उदय होने और डूब जानेवाले सूरज की नहीं, मंद पड़ जानेवाले चांद-सितारों की नहीं, बल्कि सारा संसार बनानेवाले की खोज में थे।

सच्चाई की ऐसी खोज में एक दिन जब वे गुफा में मौजूद थे तो फरिश्ते ने आकर उन्हें खुदा का संदेश दिया—आपको पैगंबर चुना गया है, नबी बनाया गया है।

जब वे नबी हो गये तो सबसे पहले उनकी पत्नी खदीजा ने उन्हें पैगंबर

माना। इसके बाद उनके चचेरे भाई अली मुसलमान बने। उनके दोस्त अबूबकर भी उनके साथ हो गये। धीरे-धीरे उनके माननेवालों की संख्या बढ़ती गयी। लोग उनसे प्रभावित होने लगे।

उनकी शिक्षा, जिसे इस्लाम के नाम से याद किया जाता है, पहले अरबिस्तान और उसके आसपास फैली और फिर बढ़ते-बढ़ते सारी दुनिया में फैल गयी। उनका शिष्टाचार, सच्चाई और भलाई सारे संसार के लिए आदर्श बन गयी।

हजरत मुहम्मद को नबी बनने के बाद बड़ी कठिनाइयां उठानी पड़ीं। अपने-पराये, मित्र सभी दुश्मन बन गये। लोग उनकी जान लेने पर उतारू थे, और यह केवल इस वजह से था कि वे अच्छी बातों की ओर लोगों को खींच रहे थे, झूठ बोलने से मना करते थे। उस समय के बुरे रस्म-रिवाजों के विरुद्ध उन्होंने आवाज उठायी। जब वे मक्का के लोगों के अत्याचार से परेशान हो उठे तो अपने कुछ साथियों के साथ मदीना चले आये, जहां उनका बहुत स्वागत किया गया।

मदीना पहुंचकर उन्हें बड़ी ताकत मिली। हजारों लोगों ने उन पर अपना विश्वास प्रगट किया और सच्चे-पक्के मुसलमान बन गये। दस वर्ष के अंदर ही बड़े-बड़े बलवानों के सिर झुक गये और सारा अरबिस्तान इस्लाम के झंडे तले आ गया। लोगों को अमन-शांति से जीवन बिताने का अवसर मिला। झूठ, धोखा, अत्याचार और दूसरी बुराइयों से लोगों ने छुटकारा पाया।

२३ वर्षों तक दुनिया को खुदा का पैगाम सुनाने के बाद, ६३ वर्ष की आयु में, वे मदीना में स्वर्गवासी हुए। आज १४०० वर्ष बीत जाने पर भी चालीस-पचास करोड़ से भी ज्यादा लोग आपकी शिक्षा पर चलते हैं।

हजरत मुहम्मद किसी की बुराई नहीं करते थे। वे बुराई करनेवाले को माफ कर दिया करते थे। उन्होंने कभी निजी मामलों में बदला नहीं लिया। उन्होंने कभी किसी गुलाम, दासी, औरत या जानवर को अपने हाथों नहीं मारा। जब वे घर में जाते तो सदा हंसते और मुस्कराते रहते। दोस्तों के बीच पांव फैलाकर नहीं बैठते। बातें धीरे-धीरे करते ताकि कोई याद रखना चाहे तो सहज ही याद कर ले।

वे बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। जब वे सफर करके लौटते और बच्चे रास्ते में मिल जाते तो वे उनमें से किसी बच्चे को अपने साथ सवारी में बिठा लेते। वे बच्चों को पहले खुद सलाम करते।

यह घटना सहाबी [हजरत मुहम्मद के साथी] के बचपन की है। वे किसी बाग में चले जाते थे और पत्थर मारकर खजूर तोड़ते थे। एक दिन लोग उन्हें पकड़कर हजरत मुहम्मद के पास ले गये। हजरत मुहम्मद ने सहाबी से पूछा, "खजूर पर पत्थर क्यों मारते हो ?"

सहाबी ने कहा, "खजूर खाने के लिए।"

हजरत मुहम्मद ने कहा, "जो खजूर जमीन पर टपक पड़ें, उन्हें उठाकर खा लिया करो। पत्थर मारकर खजूर गिराना बुरी बात है।"

हजरत मुहम्मद की शिक्षा में अरब, गैर-अरब, धनवान-गरीब, काला-गोरा, मुसलमान, गैर-मुसलमान सब बराबर हैं। इनमें न कोई छोटा है, न बड़ा।

तुमने अकसर देखा होगा कि सभी मुसलमान, चाहे छोटा हो या बड़ा, बादशाह हो या फकीर, एक साथ नमाज

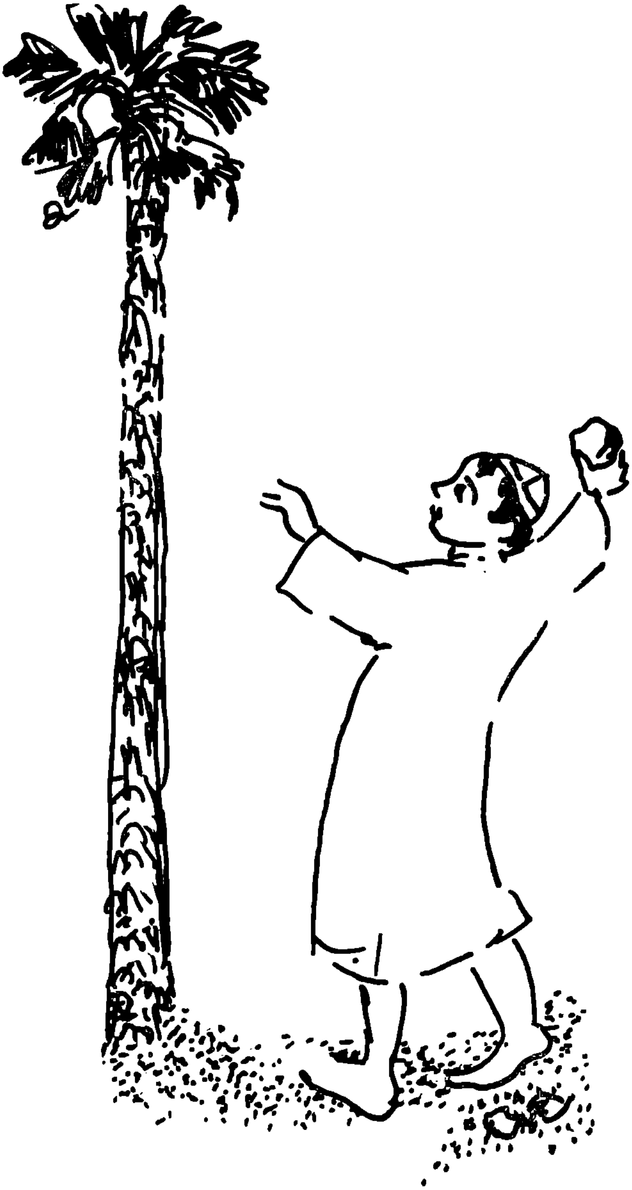

पढ़ते हैं। हज के अवसर पर सारी दुनिया से आये मुसलमान एक जैसे ही कपड़े पहनते हैं। मुसलमान धनवान के लिए यह जरूरी है कि वह अपने कुल धन का कुछ भाग वर्ष में एक बार गरीब लोगों की सहायता के लिए दे। गरीबों को दिया जानेवाला यह धन "जकात" कहलाता है।

रमजान के महीने में रोजा रखने का मतलब भी यह है कि रोजा रखनेवाले को यह मालूम हो कि भूख और प्यास क्या होती है और इस एहसास से एक आदमी में दूसरे आदमी के लिए हमदर्दी की भावना जागे। हजरत मुहम्मद ने इंसान से हमदर्दी, बराबरी का बर्ताव, सच्चाई और ईमानदारी वगैरह को बड़ी ऊंची जगह दी है।

एक हब्शी औरत मस्जिद की सफाई का काम करती थी। जब यह औरत बीमार होकर मर गई तो हजरत मुहम्मद के साथियों ने उसे रात में ही दफन कर दिया।

दूसरे दिन पैगंबर साहब ने पूछा कि उस औरत का क्या हाल है। उनके साथियों ने बताया कि वह औरत रात में ही मर गई और हमने उसे दफन भी कर दिया।

हजरत मुहम्मद ने कहा कि मुझे खबर क्यों नहीं दी ?

साथियों ने जवाब दिया कि रात का समय था और आप इबादत कर रहे थे। आपको तकलीफ के ख्याल से सूचना नहीं दी।

हजरत मुहम्मद ने कहा कि जबतक मैं जीवित हूं, कभी ऐसा न करना कि मेरे जनाजे की नमाज पढ़े बिना किसी को दफन कर दिया जाये। मेरी दुआ मरनेवाले के लिए दया के समान होती है।

हजरत मुहम्मद साथियों को लेकर औरत की कब्र पर गये और सबके साथ जनाजे की नमाज पढ़ी, दुआ की। अपने-पराये, अमीर-गरीब सबके लिए उनके मन में सम्मान था। वे सबसे मेहरबानी से मिलते थे। वे केवल मुसलमानों के ही पैगंबर नहीं, सारे संसार के लिए दया के दूत बनकर आये थे।

एक बार मुहम्मद साहब ने किसी आदमी से खजूर उधार ली। कुछ दिनों के बाद वह आदमी उनके पास आया और अपनी खजूर वापस मांगने लगा। उन्होंने अपने एक साथी से कहा कि वे उनकी ओर से यह कर्ज लौटा दें। उनके साथी

जो खजूर लौटा रहे थे, वह उतनी अच्छी नहीं थी जितनी उस आदमी ने पैगंबर साहब को कर्ज में दी थी। उसने खराब खजूर लेने से इंकार कर दिया।

मुहम्मद साहब के साथी ने उस आदमी से कहा कि तुम पैगंबर साहब की दी हुई खजूर लेने से इंकार करते हो?

उस आदमी ने कहा, "हां, अगर मैं पैगंबर साहब से इंसाफ की आशा न करूं तो फिर किससे करूं?"

हजरत मुहम्मद ने जब ये बातें सुनीं तो उनकी आंखों से आंसू निकल पड़े और उन्होंने कहा कि यह बात बिलकुल ठीक है।

एक बार हजरत मुहम्मद लोगों में कुछ सामान बांट रहे थे। सामान लेने-वालों की बहुत भीड़ थी। भीड़ में एक आदमी हजरत मुहम्मद के ऊपर गिर पड़ा। उस समय पैगंबर साहब के हाथ में लकड़ी की पतली-सी छड़ी थी। उन्होंने उस आदमी को उस छड़ी से अलग हटाया। चूक हो गयी और लकड़ी का सिरा उस आदमी के मुंह पर जा लगा। उसे थोड़ी-सी चोट लग गयी।

पैगंबर साहब को इस बात का बहुत दुख हुआ। उन्होंने तुरंत उस आदमी से बदला लेने को कहा। वह आदमी उनकी आदत अच्छी तरह जानता था।

उसने कहा, "हजरत, मैंने आपको माफ कर दिया।"

इस्लाम की शिक्षा में है कि सांसारिक जरूरतें जीवन का भाग हैं, लेकिन इन जरूरतों के लिए नेकी, सच्चाई और सादगी अपनानी चाहिए। दिखावा और नुमाइश ठीक नहीं है।

एक बार किसी ने हजरत अली को दावत दी और खाना उनके घर भेज दिया। फातिमा ने, जो हजरत अली की पत्नी और हजरत मुहम्मद की बेटी थीं, कहा कि अगर पैगंबर साहब भी हमारे साथ खाना खाते तो बड़ा अच्छा होता।

हजरत अली ने बीवी की बात सुनी और तुरंत पैगंबर साहब के पास पहुंचकर उनसे अपने साथ खाना खाने को चलने के लिए कहा। पैगंबर साहब अपनी बेटी फातिमा के घर आये लेकिन जब देखा कि दीवारें रंगीन परदों से सजी हुई हैं तो जैसे आये थे, वैसे ही वापस चले गये।

हजरत अली ने जब पैगंबर साहब से लौट आने की वजह पूछी तो उन्होंने

कहा कि यह बात नबी की शिक्षा के खिलाफ है कि वह किसी के सजे-धजे घर में जायें।

पैगंबर साहब का कहना था कि घर में एक बिस्तर अपने लिए, एक पत्नी के लिए और एक मेहमान के लिए हो तो बहुत है। इससे अधिक बिस्तर शैतान का हिस्सा है।

हजरत मुहम्मद की सादगी की कई घटनाएं हैं।

किसी अंसारी ने एक मकान बनवाया। मकान इतना ऊंचा था मानो आकाश से बातें करता हो। पैगंबर साहब ने मकान मालिक का नाम पूछा। जब मकान मालिक उनके पास आया और उसने सलाम किया तो उन्होंने सलाम का जवाब नहीं दिया और चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया। ऐसा कई बार हुआ। आखिर पैगंबर साहब के रवैये की वजह उसे मालूम हुई। मकान मालिक हजरत मुहम्मद का अनुयायी था। उसने तुरंत मकान गिराकर जमीन के बराबर कर दिया।

पैगंबर साहब जब एक दिन उधर से निकले तो अंसारी का विशाल मकान न पाकर अचंभे में पड़ गये। पूछने पर पूरी बात मालूम हुई। उस समय पैगंबर साहब ने कहा कि जरूरी मकान के अलावा दूसरी सारी इमारतें आदमी के लिए मुसीबत हैं।

हजरत मुहम्मद किसी लड़ाई से लौट रहे थे।

चलते-चलते लश्कर थक गया था। कड़ी धूप से बचने के लिए और आराम के लिए सारा लश्कर पेड़ों की छाया में ठहर गया।

पैगंबर साहब भी एक पेड़ के नीचे आराम करने लगे। थके लोगों को थोड़ी देर में नींद आ गयी।

दुश्मनों ने जब देखा कि सब सोये पड़े हैं तो उन्होंने एक आदमी को लालच दिया कि वह मौका पाकर हजरत मुहम्मद को जान से मार डाले। जब वह आदमी पैगंबर साहब पर खुली तलवार लेकर झपटा तो अचानक पैगंबर साहब की आंखें खुल गयीं।

दुश्मन ने कहा, "अब मेरी तलवार से आपको कौन बचायेगा?"

पैगंबर साहब ने मुस्कराकर जवाब दिया, "वही, जिसने हमेशा बचाया है।"

दुश्मन पैगंबर साहब पर हमला करना चाहता ही था कि अचानक उसके हाथ से तलवार छूटकर दूर जा गिरी। हजरत मुहम्मद ने लपककर तलवार उठा ली और कहा, "अब बता, तुझे मेरे हाथ से कौन बचायेगा ?"

दुश्मन कांप उठा और कहने लगा, "आपकी दया और अच्छा बर्ताव ही मुझे मौत से बचा सकता है।"

पैगंबर साहब ने तलवार फेंक दी और दुश्मन को माफ कर दिया।

अब्दुल्ला बिन अबी हजरत मुहम्मद से दुश्मनी रखता था। दोस्ती के पर्दे में विश्वासघात करता और दुख पहुंचाता था। वह जीवन भर इसी कोशिश में लगा रहा कि उनको नुकसान पहुंचाये ताकि वे अच्छी और सच्ची बातें लोगों तक न पहुंचा सकें। लेकिन जब उसकी मौत हुई तो पैगंबर साहब ने उसके जनाजे की नमाज पढ़ी और खुदा से उसके पापों की माफी के लिए दुआ की।

पैगंबर साहब के एक दोस्त हजरत उमर को इस पर अचंभा हुआ कि ऐसे दुश्मन के लिए दुआ क्यों मांगी जाये। हजरत मुहम्मद ने मुस्कराकर कहा, "अगर मुझे इसके पापों की माफी के लिए सत्तर बार दुआ करने की आज्ञा होती तो मैं ऐसा जरूर करता।"

हजरत मुहम्मद बादशाहों के बादशाह थे। उनका जीवन अत्यंत सादा था। उन्होंने कभी सरकारी धन से लाभ नहीं उठाया और न अपने साथियों को ऐसा करने दिया। पैगंबर साहब ने बादशाही में फकीरी की।

हजरत मुहम्मद किसी काम को छोटा नहीं समझते थे। अपने घर में वे अपने हाथों से बकरी दूहते थे, झाड़ू लेकर सफाई करते थे। अपने कपड़े और अपनी चप्पलें भी खुद सिलते थे। ऊंटों को पोंछने-टहलाने का काम करते भी उन्हें संकोच नहीं होता था। वे नंगे फर्श पर या खजूर की रुखड़ी चटाई पर सोते थे।

उनकी बीमारी के दिनों की बात है। रुखड़ी चटाई पर सोने से उनकी पीठ पर गहरे निशान बन गये थे। उनके एक धनी मित्र ने यह देखा तो उसे बड़ा दुख हुआ। बोला "हजरत, अब तो इंकार न कीजिए। मैं सोने के लिए आज ही गद्दा भिजवा देता हूं।"

मुहम्मद साहब हंसे, "दोस्त, मैं आराम भोगने के लिए पैदा नहीं हुआ हूं।'

मुहम्मद साहब कभी सिंहासन पर नहीं बैठते थे। दूसरे देशों के बादशाह उनसे मिलने आते तो भी अरबों का यह अनोखा बादशाह साधारण लोगों की तरह फर्श पर बैठकर उनसे बातें करता।

वे कभी रेशम के कपड़े नहीं पहनते थे। ज्यादातर तो वे एक सफेद चादर से ही पूरा बदन लपेटे रहते थे। उनका सर और पांव हमेशा खुला रहता था। कच्ची ईंट का उनका मकान बगैर दरवाजे का था। दरवाजे की जगह सिर्फ पर्दे लटकते थे।

उनकी बेटी फातिमा के घर का यह हाल था कि उनका जीवन गरीबी में गुजरता था। काम करने के लिए कोई दासी भी नहीं थी। फातिमा चक्की चलातीं, खुद पानी लातीं। मेहनत के इन कामों से फातिमा की हथेलियों-कंधों पर गहरे निशान बन गये थे।

एक दिन उन्होंने अपने पिता हजरत मुहम्मद से कहलवाया कि जंग में पकड़ी गयी गुलामों में से एक गुलाम फातिमा को मिल जाये तो घर के कामों में मदद मिलेगी।

पैगंबर साहब ने कहा, "गुलामों के पहले से ही बहुत हकदार हैं। जबतक उन सबका इंतजाम नहीं हो जाता, फातिमा के लिए कुछ नहीं किया जा सकता।"

अकसर ऐसा होता कि घर में खाने के लिए कुछ न होता और पैगंबर साहब रोजा रख लिया करते थे।

एक बार हजरत मुहम्मद भूखे थे। दोपहर के समय घर से निकल पड़े। रास्ते में हजरत अबूबकर और हजरत उमर से भेंट हो गई। ये दोनों भी भूखे ही थे। तीनों अपने एक साथी हजरत अबू अय्यूब अंसारी के घर पहुंचे। हजरत अंसारी हमेशा पैगंबर साहब के लिए दूध बचाकर रखते थे। आज उनके आने में कुछ देर हो गयी थी, इसलिए दूध उनके बच्चों ने पी लिया था।

पैगंबर साहब जब हजरत अंसारी के घर पहुंचे तो वे बाग में थे। हजरत अंसारी की पत्नी को जब पैगंबर साहब के आने की खबर मिली तो वे उनके स्वागत के लिए दरवाजे पर आयीं। हजरत अंसारी भी दौड़े आये और कहा कि हुजर, आज बेवक्त कैसे आ गये? पैगंबर साहब ने सारा हाल बतलाया।

हज़रत अंसारी बाग में गये और खजूर ले आये। फिर खाना तैयार करवाने लगे। पैगंबर साहब ने जब खाना शुरू किया तो एक रोटी पर थोड़ा-सा सालन रखकर अपनी बेटी फातिमा के लिए भिजवाया। वे भी कई दिनों से भूखी थीं। जब पैगंबर साहब ने तरह-तरह के पकवान अपने सामने देखे तो उनकी आंखों में आंसू आ गये।

बहुत से लोग रूखी-सूखी भी नहीं

खा पाते, तब इतने तरह के पकवान उन्हें एकदम पसंद नहीं आते थे।

हजरत मुहम्मद के समय में हातिम ताई नाम का एक सरदार था। वह तय का रहनेवाला था और अपने कबीले का सरदार था। हातिम के मरने के बाद उसका बेटा अदी कबीले का सरदार बना।

नबी होने के बाद हजरत मुहम्मद ने अपने चचेरे भाई और दामाद हजरत अली को अदी के पास इस्लाम की शिक्षा लेकर भेजा। अदी ने हजरत अली के लश्कर को देखा तो घबराकर, अपना कबीला छोड़, शाम देश की ओर भाग गया।

अदी की एक बहन थी सोफाना। वह कबीले के दूसरे लोगों के साथ पकड़ी गयी और मदीना लायी गयी।

सोफाना को जब हजरत मुहम्मद के सामने पेश किया गया तो उसने कहा, "ऐ खुदा के पैगंबर, मेरा बाप मर चुका है और मेरा भाई भाग गया है। मुझे इस कैद से छुड़ानेवाला अब कोई नहीं है। आपकी मेहरबानी और इंसाफ के अलावा कोई सहारा नहीं है। मेरा बाप हातिम बड़ा नेक था। वह कैदियों का आर्थिक दंड भरकर उन्हें आजाद करा देता था। औरतों की इज्जत करता था और गरीबों से हमदर्दी रखता था। मैं उसी की बेटी हूं और आजादी चाहती हूं।"

हजरत मुहम्मद ने कहा, "हातिम में वही गुण थे जो एक मुसलमान में होने चाहिए।" उन्होंने हुक्म दिया कि सोफाना को तुरंत छोड़ दिया जाये। सोफाना के साथ दूसरे लोगों की भी रिहाई हो गयी। तोहफों के साथ उन्हें उनके नगर तय वापस भेज दिया गया।

सोफाना बाद में अपने भाई अदी के पास गयी और सारा माजरा कह सुनाया। वह हजरत मुहम्मद के बर्ताव से इतना प्रभावित हुआ कि मदीना पहुंचकर पैगंबर साहब के साथियों में शामिल हो गया।

अपने आखिरी दिनों में मुहम्मद साहब बहुत बीमार और कमजोर हो गये थे। कमजोरी इतनी बढ़ी कि एक दिन वे मसजिद में नमाज पढ़ने न जा सके, और उनकी जगह ली अबूबकर ने।

लोगों ने यह देखा तो एकदम घबरा गये, और यह बात फैल गयी कि मुहम्मद साहब का इंतकाल हो गया। खबर मुहम्मद साहब तक पहुंची तो वे किसी

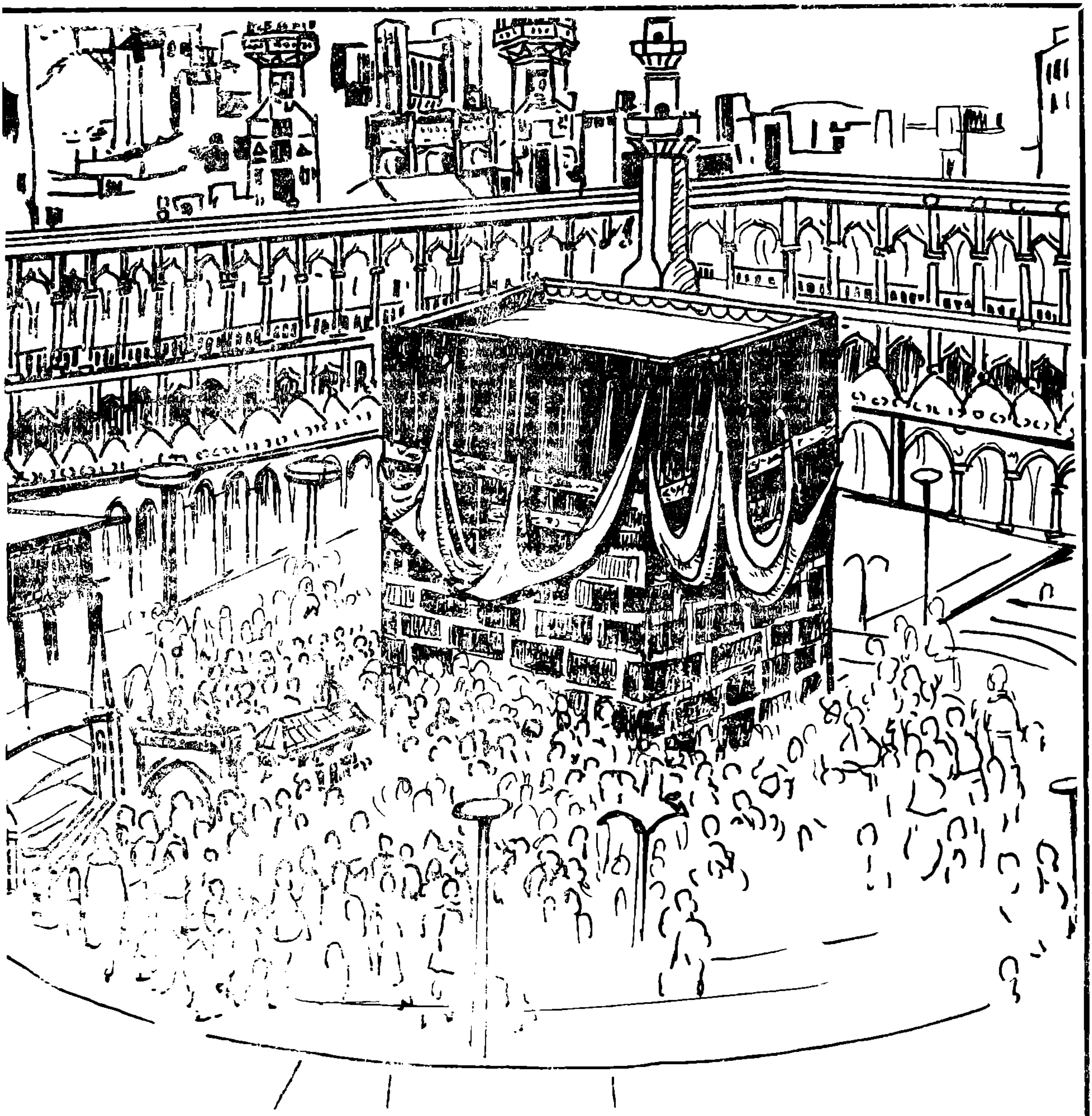

काबा – जिसकी तरफ रुख करके मुसलमान नमाज पढ़ते हैं।

प्रकार मसजिद के खंबे पकड़कर वहां पहुंचे और खड़े हो गये।

अबूबकर उन्हें देखकर चुप हो गये।

मुहम्मद साहब कमजोर आवाज में बोले, "तुम अपनी बात जारी रखो।"

जब अबूबकर की बात पूरी हो गयी तो मुहम्मद साहब ने कहा, "मेरे इंतकाल की अफवाह फैली है और उससे आपलोग काफी परेशान हो गये हैं। लेकिन यह परेशानी क्यों है ? क्या मुझसे पहले जो पैगंबर आये, वे सब यहीं बने हैं, जो मैं हमेशा यहीं रहूंगा ? हर चीज का समय निश्चित है। जो आया है, वह जायेगा। इसे बहुत समय तक टाला नहीं जा सकता है।

"जिसने मुझे पृथ्वी पर भेजा है, मुझे उसके पास वापस जाना है। मेरी आप सबसे विनती है कि एक-दूसरे का आदर करें और अच्छे काम में एक-दूसरे की मदद करें। किसी के धर्म को नीचा न दिखायें। सबकी भलाई का यही एकमात्र रास्ता है।"

जब उनकी तबियत बहुत बिगड़ी थी और वे बेहोश-से थे तो किसी ने उन्हें दवा खिला दी। इससे वे बहुत नाराज हुए और बोले, "जो लोग अपने पैगंबरों के कब्र की पूजा करते हैं, खुदा उनसे नाराज होता है। हे खुदा, कोई मेरे कब्र की पूजा न करे।"

उन्होंने अपनी पत्नी आयशा से कहा, "देखो, अपने पास पैसा बिलकुल मत रखो। याद करो और यदि कहीं पैसा जमाकर रखा हो तो उसे तुरंत गरीबों में बांट दो।"

आयशा को मुहम्मद साहब की बात सुनकर ख्याल आया कि उसने छह दीनारें बचाकर रखी हैं।

मुहम्मद साहब बोले, "यदि तुमने कहीं कुछ धन बचाकर रखा हो तो लाकर मुझे दे दो।"

आयशा ने छह दीनारें लाकर उन्हें दे दीं।

मुहम्मद साहब ने आदेश दिया कि इन्हें अभी तुरंत जरूरतमंदों में बांट दो।

बाद में वे बोले, "अब मुझे बड़ी शांति का अनुभव हो रहा है। मैं खुदा के पास जा रहा हूं और फिर भी सोने के सिक्कों की मालिकी न छोड़ूं तो यह कितनी गलत बात है।"

इस प्रकार खुदा का पैगंबर, अपना सबकुछ खुदा को सौंपकर, खुदा के पास चला गया। ●

- सावित्री की कहानी
- संत मूलदास
- हज़रत राबिया बसरी
- मीरा
- सच्ची मित्रता
- दैत्य से देव
- गुरु गोविंद सिंह
- कौन जीता?
- नटखट कृष्ण कन्हैया
- सच की जीत

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी!

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है; यह उसकी तीसरी किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।

बच्चों की कहानियां

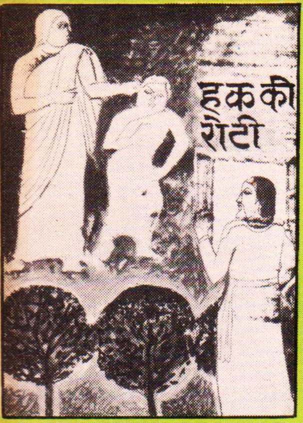

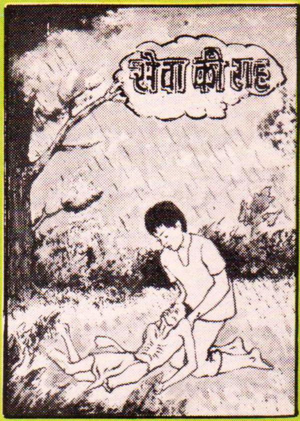

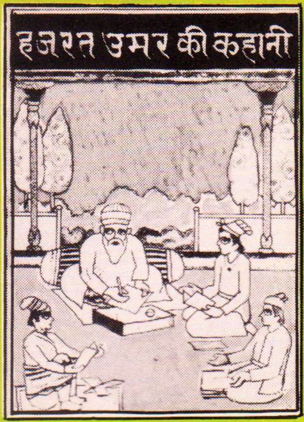

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

बच्चों की कहानियां